1–वस्तु बाजारः– प्रतिष्ठित रोजगार का सिद्धान्त

परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने अपने सिद्धान्त की व्याख्या करने के लिए **'से' के बाजार नियम का सहारा लिया** और **यह प्रतिपादित किया** कि **किसी अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी एवं अति उत्पादन असम्भव है!** जे. बी. से. (1767–1832) एक फ्रान्सीसी अर्थशास्त्री थे, ने यह प्रतिपादित किया कि, **"पूर्ति अपनी मांग का सृजन स्वयं करती है"** *(supply creates its own Demand)* **और इस प्रकार वस्तु बाजार सदैव संतुलन में होगी ! से के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति उत्पादन दो उद्देश्यों के लिए करता है–**

1– अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए

2– अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विनिमय हेतु

अतः प्रत्येक व्यक्तियों का अतिरेक उत्पादन दूसरी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही होता है इस प्रकार से अधिक उत्पादन का खतरा नहीं होगा! यदि इसके बाद मांग एवं पूर्ति में समता नहीं है तो कीमत इतना अधिक लोचशील होगा कि मांग एवं पूर्ति में समता स्थापित कर देगा! और अर्थव्यवस्था में वस्तु बाजार संतुलन की स्थिति स्थापित हो जायेगी!

संतुलन की स्थिति में

समग्र मांग = समग्र पूर्ति

$Y = E$

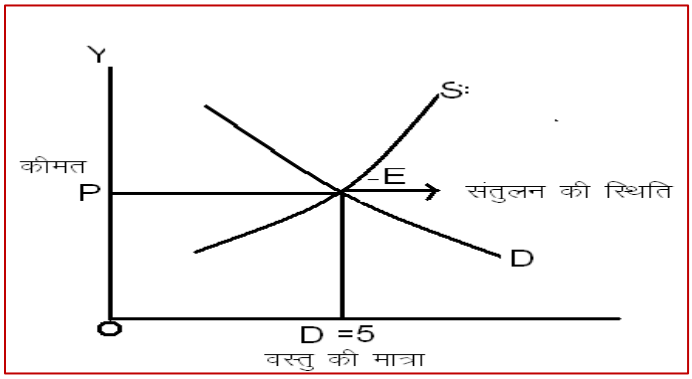

वस्तु की मांग: $Dx = F(Px)$,कीमत एवं मांग की मात्रा में विपरीत सम्बन्ध होता है

वस्तु की पूर्तिः $Sx = F(Px)$, कीमत एवं पूर्ति की मात्रा के बीच धनात्मक सम्बन्ध होता है !

ऐसी स्थिति में संतुलन वहां पर होगा जहां मांग एवं पूर्ति समान हो!

- यदि $D > S$ तो कीमत बढेगा मांग घटेगाा तथा पूर्ति बढेगी और इस प्रक्रिया में मांग = पूर्ति हो जायेगी !
- यदि $D < S$ तो कीमत घटेगा, मांग बढेगा, पूर्ति घटेगी, जब तक कि $D = S$ न हो जाये!

Classical-अर्थशास्त्रियों ने यह बताया कि यह सिद्धान्त मुद्रा अर्थव्यवस्था में भी उसी प्रकार कार्य करेगा !